UGC Approved Journal No. 49297

ISSN 2231 - 4113

Śodha Prăvāha

A Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol.14, Issue IV October 2024

Chief Editor
Dr. S. K. Tiwari
Editor
Dr. S. B. Poddar

- काशी की सांस्कृतिक परंपरा का अनूठा प्रतिनिधि : नजीर बनारसी 105-110
  डॉ० अनुजा त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास विभाग वसंत कन्या महाविद्यालय बी०एच०यू० कमच्छा वाराणसी
- मीडिया की उपभोक्तावादी संस्कृति 111-113
  प्रदीप तिवारी, शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का हिन्दी साहित्य के विकास के लिए कृतित्त्व 114-117
  रंजय कुमार, शोधार्थी, इतिहास विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (सारण)
  प्रो. डॉ. संजय कुमार सिंह, शोधपर्यवेक्षक, इतिहास विभाग, पी. एन. महाविद्यालय, परसा (सारण)
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक व शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता 118-121
  दयाशंकर यादव, शोध छात्र, डॉ. रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, अध्योध्या (उ.प्र.)
  डॉ. उमाशंकर सिंह, प्रोफेसर, शिक्षा संकाय के.एन.आई.पी.एस.एस., सुल्तानपुर (उ.प्र.)
- डॉक्टर राही मासूम रजा के उपन्यासों में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषणात्मक अध्ययन 122-127
  ललिता कुमारी, शोध-छात्रा, हिन्दी विभाग, शहीद स्मारक राजकीय महाविद्यालय, युसूफपुर, मुहम्मदाबाद, गाजीपुर
- माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की जवाबदेही तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन 128-132
  विवेक, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।
  डॉ० राजेश कुमार सिंह।।, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।

माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की जबाबदेही तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन

*विवेक**
*डॉ० राजेश कुमार सिंह।।***

शिक्षा सतत् विकास की व्यापक प्रक्रिया है। इसके माध्यम से व्यक्ति की सम्पूर्ण अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास शिक्षक द्वारा किया जाता है। शिक्षा की इस प्रक्रिया में औपचारिक, निरौपचारिक एवं अनौपचारिक तरीके अपनाये जाते हैं। औपचारिक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका विशिष्ट होती है। वह अपने शिक्षण कौशल एवं गुरुतर जबाबदेही से अपने कक्षा शिक्षण व्यवहार एवं सहशैक्षिक गतिविधियों के संचालन द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करता है। औपचारिक शिक्षा के विभिन्न स्तरों में माध्यमिक स्तर को बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक गुणों के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। अतः इस स्तर पर अध्यापन कर रहे अध्यापकों की जबाबदेही एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार का सकारात्मक व अनुशासित तथा छात्र केन्द्रित होना अपेक्षित रहता है। इसलिए माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की जबाबदेही तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का अध्ययन किया जाना आवश्यक एवं उपयोगी है। अतः अध्ययनकर्ता द्वारा प्रस्तुत विषय को अध्ययन हेतु लिया इसके लिए जौनपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं का चयन कर उनके जबाबदेही एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया जिसके लिए जबाबदेही का ऑकलन करने हेतु डॉ0 शशिकान्त त्रिपाठी एवं डॉ0 कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित जबाबदेही मापनी तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का ऑकलन करने हेतु फ्लैण्डर्स की दस वर्गीय कक्षा शिक्षण व्यवहार ऑकलन प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। प्राप्त प्रक्रियाओं के विश्लेषण से यह प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही का स्तर समान है जबकि कक्षा शिक्षण व्यवहार में शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार शिक्षकों से अधिक सकारात्मक है। माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के जबाबदेही एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य अनुकूल सम्बन्ध प्राप्त हुआ अर्थात् अध्यापकों में जबाबदेही का स्तर उच्च होने पर उनका कक्षा शिक्षण व्यवहार अधिक अनुकूल रहता है जबकि जबाबदेही के न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार भी प्रतिकूल बन जाता है जो यह प्रमाणित करता है कि माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों में समुचित जबाबदेही विकसित कर उनके कक्षा शिक्षण व्यवहार को अनुकूल बनाया जा सकता है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति संलग्नता एवं शिक्षकों के प्रति सम्मान भाव पर पड़ेगा तथा उनमें शैक्षिक गतिविधियों में संलग्नता एवं शिक्षकों में शिक्षा के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण उत्पन्न होगा जो माध्यमिक शिक्षा की प्रगति के लिए आवश्यक एवं अनिवार्य पहलू है।

मूल शब्द– माध्यमिक स्तर, अध्यापकों, जबाबदेही, कक्षा शिक्षण व्यवहार।

भूमिका :

शिक्षा एक त्रिध्रुवीय सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक पाठ्यक्रम सम्मलित होते हैं। वर्तमान शैक्षिक प्रक्रिया छात्र केन्द्रित है। सम्पूर्ण शैक्षिक आयोजन छात्र को केन्द्रित करके संचालित किया जाता हैं। इसमें शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील मार्गदर्शक के रूप

---

*शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।

**असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र०।

विकसित करना पड़ता है। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक में इन चुनौतियों के प्रति जवाबदेही हो, वह अपने शिक्षण व्यवसाय में प्रभावशाली गतिविधियों का अनुप्रयोग करता हो तथा उसका कक्षा शिक्षण व्यवहार विषयोचित होने के साथ–साथ विद्यार्थियों के मनोभावों के अनुरूप हो। माध्यमिक शिक्षा में नित नये प्रयोगों से यह संकेत मिलता है कि माध्यमिक स्कूलों की शैक्षिक स्थिति सही नहीं है। इसका एक कारण अध्यापक का अपने उत्तरदायित्व का समुचित निर्वाह न कर पाना माना जा रहा है। इसके साथ ही उसका प्रभावशाली कक्षा शिक्षण व्यवहार न अपनाना विद्यार्थियों में अरूचि पैदा करता है। शिक्षक का कक्षा शिक्षण व्यवहार विद्यार्थियों के लिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि उसके व्यवहार के सापेक्ष ही वह अध्ययन के प्रति अपनी मनोवृत्ति बनाता है। वर्तमान में माध्यमिक अध्यापकों के जबाबदेही की स्थिति, उसकी शिक्षण प्रभावशीलता तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का ऑकलन करने हेतु प्रस्तुत विषय को अध्ययन हेतु लिया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षक के जबाबदेही एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षक के जबाबदेही एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक शोध के सर्वेक्षण प्रविधि पर आधारित है क्योंकि इसमें माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के जबाबदेही एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार का आकलन करने हेतु व्यक्तिगत सर्वेक्षण के द्वारा सूचनाएं संकलित की गयी हैं। प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में जौनपुर जनपद में संचालित समस्त अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को लिया गया है। न्यादर्श के रूप में चार माध्यमिक विद्यालयों के 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं कुल 50 अध्यापकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। शोध उपकरण के रूप में डॉ0 शशिकान्त त्रिपाठी एवं डॉ0 कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित जबाबदेही मापनी तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार हेतु फ्लैण्डर्स कक्षा शिक्षण व्यवहार आकलन प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय गणना के रूप में माध्य, प्रमाणिक विचलन एवं टी–अनुपात की गणना की गयी है।

गणना व विश्लेषण :

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही की तुलना करना है। इसके लिए निर्मित परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी संख्या–1

माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही की तुलना

चर	N	M	S.D.	D	σD	t-ratio	सार्थकता
शिक्षक	25	71.15	10.20	3.55	2.68	1.32	0.05 स्तर पर असार्थक
शिक्षिका	25	74.40	8.70				

माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के जबाबदेही सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 71.15 तथा प्रमाणिक विचलन 10.20 है तथा माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के जबाबदेही सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 74.40 व प्रमाणिक विचलन 8.70 है। प्राप्त टी–अनुपात 1.32 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर df 48 के लिए टी–सारणीमान 2.63 से कम है जो असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के अध्यापकों व शिक्षिकाओं की जबाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत कर लिया गया।

में हो गयी है जो पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम में छात्र की योग्यता, क्षमता एवं गति के अनुसार सीखने और अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त करने में छात्र की सहायता करता है। शिक्षा के आरम्भिक काल में शिक्षक केन्द्र में था और छात्र उसका अनुगामी होता था। अध्यापक के माध्यम से पढ़ाया कोई भी ज्ञान पाठ्यवस्तु था। बाद में इसको शिक्षक–शिक्षार्थी तक विस्तारित कर इसे द्विध्रुवीय प्रक्रिया कहा गया। वर्तमान में सीखे जाने वाले ज्ञान की उपयोगिता के कारण पाठ्यक्रम को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाने लगा और इसको शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम तक विस्तारित करके इसे त्रिध्रुवीय कर दिया गया।

शिक्षा की व्यापक प्रक्रिया अनिवार्य रूप में आजीवन किसी न किसी स्वरूप में संचालित होती रहती है। यह औपचारिक, अनौपचारिक एवं निरौपचारिक स्वरूपों में जीवन भर चलती है। शिक्षा का औपचारिक स्वरूप एक निश्चित अवधि, पाठ्यक्रम एवं स्थान पर सम्पादित होती है। औपचारिक शिक्षा के मुख्यतः तीन स्तर है– प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा। इसमें प्राथमिक शिक्षा को आधारभूत, माध्यमिक स्तर की शिक्षा को जीवन निर्माण एवं उच्च शिक्षा को तार्किक चिन्तन एवं दक्षता विकास के स्तर में विभाजित किया जाता है। किसी राष्ट्र की प्रगति, उसकी समृद्धि एवं सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में माध्यमिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि शिक्षित राष्ट्र समृद्ध राष्ट्र का सूचक होता है इसलिए सर्वाधिक बल माध्यमिक पठन–पाठन को दिया जा रहा है क्योंकि इस स्तर पर बच्चों को ज्ञान के साथ–साथ नैतिक, चारित्रिक एवं व्यावसायिक रूप से सक्षम बनाने की प्रक्रिया सम्पादित की जाती है। इस स्तर की शिक्षा के बाद विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह आजीविका हेतु आगे की शिक्षा नहीं ग्रहण कर पाता अतः उनमें विभिन्न गुणों का समावेश इसी स्तर पर करने की अपेक्षा होती है। अतः शिक्षा प्रत्येक बालक को दिया जाना राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है।

माध्यमिक शिक्षा की मजबूती पर ही राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि निर्भर करती है। देश का आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नेतृत्व करने वाले राजनेता, व्यवसायी एवं प्रशासक माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर देश के समन्वयन में अपना विशिष्ट योगदान प्रदान करते हैं। अतः माध्यमिक शिक्षा की उपादेयता सबसे ज्यादा है। माध्यमिक शिक्षा के द्वारा बालक को समाज, राष्ट्र एवं वैयक्तिक जीवन में सफलता या असफलता की राह पर ले जाना सम्भव हो पाता है। वास्तव में शिक्षा एक राष्ट्रीय उत्तरदायित्व है। इसका सम्बन्ध बालक के भावी जीवन, राष्ट्र के भावी विकास एवं समाज की भावी स्थिति के निर्धारण से होता है। यदि भारतवर्ष को इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों के अनुरूप समर्थ एवं सक्षम बनाना है तो माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को सबके लिए अनिवार्य करने की आवश्यकता है। इस लक्ष्य की सम्प्राप्ति विभिन्न योजनाओं, प्रोत्साहनों एवं सामाजिक सहयोग से करने का प्रयास हो रहा है और सरकार द्वारा इसके लिए नई शिक्षा नीति 2020 भी लागू की गयी है किन्तु अभी भी समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों की माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है इसे दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान शैक्षिक नीति में माध्यमिक स्कूलों में पढ़ाई की व्यवस्था को इस रूप में देने की पहल की गयी है ताकि इसके आगे की शिक्षा न प्राप्त करने पर भी बालक अपने भावी जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सके तथा राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान सुनिश्चित कर सके। इस प्रकार की क्षमता विकास हेतु शिक्षकों में समुचित जबाबदेही एवं अपने कक्षा शिक्षण को उत्कृष्ट बनाने हेतु छात्र केन्द्रित अनुक्रियाओं को प्रोत्साहित करने हेतु उपयुक्त कक्षा शिक्षण व्यवहार अपनाने की जरूरत है ताकि विद्यार्थियों में भी अधिगम के प्रति सकारात्मकता एवं शैक्षिक रूचि का विकास हो सके।

शिक्षक को शैक्षिक व्यवस्था का प्रमुख निर्धारक माना जाता है। विशेषकर माध्यमिक शिक्षा में उसकी भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वह बच्चों की मनोदशाओं को समझकर उसके अनुसार अपने शिक्षण को संचालित करने, उनमें विद्यालय के प्रति रूचि उत्पन्न करने, उन्हें अपने विशिष्ट व्यवहार से संतुष्ट रखने, उनकी मनोदशाओं का ऑकलन करने, उनके संवेगों का नियंत्रण करने तथा उनमें अपने जीवन के प्रति सकारात्मकता लाने की क्षमता सवंर्द्धित करता है। इसके लिए उसे जबाबदेही के साथ कार्य करते हुए अनुकूल कक्षा शिक्षा व्यवहार के माध्यम से विद्यार्थियों में भयमुक्त एवं आनन्ददायी भाव

अर्थात् माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही का स्तर समान है। इसके कारणों में उनकी शैक्षिक योग्यताओं में समानता, उनकी परिवेशीय दशाओं एवं संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति में समानता, उन्हें अपने कार्य निष्पादन हेतु उपलब्ध अवसर एवं गतिविधियों के सम्पादन हेतु प्राप्त संसाधनों के अनुप्रयोग की स्थिति में समानता, उनके सामाजिक जुड़ाव एवं विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के साथ सम्बन्धों की स्थिति में समानता आदि हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना करना है। इसके लिए निर्मित परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी संख्या–2

माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना

चर	N	M	S.D.	D	σD	t-ratio	सार्थकता
शिक्षक	25	452.95	17.40	17.70	5.05	3.50	0.05 स्तर पर सार्थक
शिक्षिका	25	470.65	18.30				

माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 452.95 तथा प्रमाणिक विचलन 17.40 है तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 470.65 व प्रमाणिक विचलन 18.30 है। प्राप्त टी–अनुपात 3.50 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर df 48 के लिए टी–सारणीमान 2.63 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के अध्यापकों व शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को अस्वीकृत कर दिया गया। चूंकि माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य (470.65) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के माध्य (452.95) से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार अध्यापकों से उच्च है। इसके कारणों में शिक्षिकाओं का विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ाव होना, उनमें कक्षा–कक्ष सम्बन्धी स्थितियों के प्रति अधिक सजगता व संवेदनशीलता रखना, शिक्षिकाओं की कार्यशैली एवं विद्यार्थियों के आशंकाओं का समुचित निराकरण एवं प्रभावी मार्गदर्शन करना, विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं पर सकारात्मकता रखना तथा शिक्षक गतिविधियों का अनुक्रमिक संचालन करना आदि हो सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का तृतीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर के अध्यापकों एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही व कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन करना है जिसके लिए निर्मित सह–सम्बन्धात्मक परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी संख्या–3

माध्यमिक स्तर के अध्यापकों एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही व कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन

चर	N	ΣX	ΣX^2	ΣY	ΣY^2	ΣXY	r
जबाबदेही	50	3649	3240272	23137	14778380	14426913	0.13
कक्षा शिक्षण व्यवहार							

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उक्त तालिकानुरूप माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के जबाबदेही के प्राप्तांकों का योग 3649 तथा उनके प्राप्तांकों के वर्गों का योग 3240272 है जबकि उनके कक्षा शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों का योग 23137 तथा प्राप्तांकों के वर्गों का योग 14778380 है। माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के जबाबदेही

व कक्षा शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों के गुणनफल का योग 14426913 है। प्राप्त सह–सम्बन्ध गुणांक 0.13 है जो धनात्मक सह–सम्बन्ध गुणांक की श्रेणी में आता है। जिससे यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के जबाबदेही व कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य धनात्मक सम्बन्ध होता है। अर्थात् जबाबदेही का स्तर उच्च होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार अनुकूल रहता है जबकि जबाबदेही का स्तर न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रतिकूल हो जाता है। इसके कारणों में जबाबदेही की स्थिति में अध्यापकों में विद्यालय, विद्यार्थियों, अभिभावकों व समाज के प्रति सकारात्मकता एवं सक्रियता रहती है जिसके कारण उनका कक्षा शिक्षण व्यवहार अनुकूल बना रहता है।

निष्कर्ष :

1. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों व शिक्षिकाओं के जबाबदेही में सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ अर्थात् माध्यमिक स्तर के अध्यापकों एवं शिक्षिकाओं के जबाबदेही का स्तर समान है।
2. माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य (470.65) माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के माध्य (452.95) से अधिक पाया गया अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार अध्यापकों से उच्च है।
3. माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के जबाबदेही व कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य धनात्मक सम्बन्ध प्राप्त हुआ अर्थात् जबाबदेही का स्तर उच्च होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार अनुकूल रहता है जबकि जबाबदेही का स्तर न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रतिकूल हो जाता है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, आर.एन. और अस्थाना (1987): "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. गुप्ता, एस0पी0 (2008) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज.
3. गुप्ता, एस0पी0 एवं अलका गुप्ता (2012) : भारतीय शिक्षा की समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. चौहान, एस0एस0 (2012) : एडवान्स एजुकेशनल साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
5. पाण्डेय, के0पी0 (2004) : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी।
6. सारस्वत, मालती (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ.
7. सिंह, कर्ण (2004) : शिक्षा के नूतन आयाम, वसुन्धरा प्रकाशन, खीरी लखीमपुर
8. सिंह, अरूण कुमार (2006) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पटना.

***